WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-1 Issue-2
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(November 2024)

भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में महिलाओं का योगदान

श्रीमती रजनी गुप्ता
शोधार्थी

शोधसार

भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार हमारे यहाँ की स्त्रियाँ आन-बान और शान है क्योंकि स्त्री के बिना इस संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। स्त्री के बिना न उत्सव है, न परिवार है न प्रथाएं है, और न सामाजिक संतुलन। स्त्री और भारतीय संस्कृति को केन्द्र में रखकर देखें तो अनेकानेक ''योगदान दृष्टिगत होते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा की संवाहक रही है स्त्री, इतना ही नहीं त्रिलोक जननी कही गई है स्त्री। सुबह उठते ही स्त्रियां एक नई उमंग एवं उत्साह से अपने घर परिवार के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत वर्ष में आदि काल से ही नारी शक्ति का आदर तथा उपासना की गई है। समय परिवर्तनशील है एवं हमेशा एक जैसा नहीं रहता आधुनिक काल में पुन: नारियों को मजबूत किया है। सतीप्रथा, बाल विवाह, विधवाओं के प्रति हेय दृष्टि जैसे कुरीतियाँ लगभग समाप्त हो चुकी है। भारतीय संविधान में नारियों को नर के समान ही अधिकार प्राप्त है। भारत मातृशक्ति आराजक देश है। सारी विधाएँ माता है। गंगा भी माता है।

बीज शब्द

स्त्री, भारतीय, सामाजिक, नारी, महिलाएँ आदि।

शोध विस्तार

हमारे वेदों उपनिषदों शास्त्रों तथा स्मृतियों में इस तथ्य का बारम्बार उल्लेख मिलता है गार्गी मैत्रेयी लोपा मुद्रा आदि इनमें प्रमुख नाम है। भारतीय समाज में नारी की भूमिका नारी का सम्मान करना एवं उनके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है, कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधा भाषी रही है। एक

तरफ तो उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। तो दूसरी ओर बेचारी को अबला भी कहा गया है इन दोनों ही अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतंत्र विकास में बाधा पहुँचाई है।

चिंतनात्मक विकास

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बल पर भारतीय समाज खड़ा है।

नारी की भूमिका

नारी विधाता की सर्वोत्तम और सिरत की पराकाष्ठा और उसकी गहनता को मापना और दुष्कर ही नहीं अपितु नामुमकिन भी है। सभ्यता, संस्कृति, संस्कार और परम्परा महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होती है।

भारत के विकास में महिलाओं का योगदान

भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में तो महिलाओं का विशेष योगदान तो है ही, इसके अलावा भी विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की विशेष भूमिका रही है- जैसे आज मीडिया, पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में भी महिलाओं का वर्चस्व कायम है। सेना, वायुयान, उड़ान, शिक्षा विज्ञान, खेलकूद, व्यवसाय, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा आदि। खेती के क्षेत्र में भी महिलाएँ पुरूषों के साथ कार्य करती है, महिलाओं ने ग्रामीण क्षेत्र से लेकर शहरी क्षेत्र तक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राचीन काल में नारी शिक्षित विदुषी कर्तव्य परायण होती थी, आध्यात्म और लोकाचार के अतिरिक्त ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी पुरूषों से कम नही थी गार्गी, अपाला, अरून्धती, के साथ-साथ सावित्री जैसी स्त्रियाँ भी थी। जो अपने सौभाग्य के लिए यमराज के सामने अड़ जाती है। और न सिर्फ अड़ती है अपितु असंभव को भी संभव करते हुए पति के प्राण वापस लाती है। ऋषि आश्रम हो या राजमहल, कंगाल हो या धनवान की कोठी'' नारी यत्र-तंत्र सर्वज्ञ पूज्य थी, पूज्य है और पूज्य रहेगी।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में हम कह सकते है, कि नारी दुष्ट मर्दन में चण्डी है, तो संग्राम में कैकई, श्रद्धा में शबरी है, तो सौन्दर्य में दमयन्ती, सुगृहणी में सीता है, तो अनुराग में राधा, विदुता में गार्गी, तो राजनीति में लक्ष्मीबाई तुल्य है।

यहाँ कण-कण में शक्ति की उपस्थिति को महसूस किया जाता है। और सम्मान भी दिया जाता है। इसलिए आवश्यकता है कि नारी आधुनिकता की विसंगतियों के बीच भी विवेकवान बनी रहे। अपने स्वरूप के अनुरूप कर्त्तव्यों का ज्ञान और उनके पालन की क्षमता विकसित करें तभी वह मानव को मंगलमय लोग दर्शन करा सकेगी। निश्चय ही वह दिन अब दूर नहीं हैं नारी का योगदान भारतीय समाज में सर्वत्र व्याप्त है। चाहे संतुलन की बात हो या न्याय की दृष्टि डालने पर अनेकानेक उदाहरण मिल जाते हैं। भारतीय सामाजिक व्यवस्था की इकाई परिवार है जो पूर्ण ही नहीं होता नारी के बिना। स्त्री के बिना मकान घर नहीं बन सकता ऐसी उपयोगिता है, भारतीय चिंतन में स्त्री की। हिन्दू समाज में नारियों की स्थिति सम्मान जनक स्थिति है। कोई भी धार्मिक कार्य बिना पत्नी के सम्पन्न नहीं होता पुरूष स्त्री के बिना अपूर्ण है। गृह की शोभा सम्पत्रता स्त्री से मानी जाती है। नारी 'स्नेह सौजन्य की प्रतिमा है, त्याग व समर्पण की मूर्ति है। नारी का अपमान मानवता का सबसे बडा अपराध है। स्त्री के बिना न उत्सव है, न परिवार है न प्रथाएँ हैं। न सामाजिक संतुलन स्त्री और भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखकर देखें तो अनेकानेक योगदान नारियों के दृष्टिगत होते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा की संवाहक रही है स्त्री इतना ही नहीं त्रैलोक्य जननी कही गई है नारी। भारतीय दर्शन संस्कृति परम्पराओं में नारी को पुरूषों से भी ऊँचा स्थान दिया गया है। नारी देवी है, वह माँ भी है, बहन भी है, और पुत्री भी है। हिन्दु शास्त्रों में पराई स्त्री को माता कहा गया है। दुनियाँ के कुछ भागों में मान्यता है कि जब परमात्मा ने मानव को उत्पन्न किया तो मानव ने स्वयं को एकाकी पाकर परमात्मा से साथी मांगा परमात्मा ने वायु से शक्ति, सूर्य से गर्मी, हिम से शीत, पारे से चंचलता, तितलियों से सौन्दर्य, और मेघ गर्जन से शोर, लेकर स्त्री की रचना की। स्त्री पुरूष की शरीरार्ध और अर्धांगिनी मानी गई हैं। श्री और लक्ष्मी के रूप में वह मनुष्य के जीवन को सुख और समृद्धि से दीप्त और गुंजित करने वाली कही गई उसका आगमन पुरूष के लिए शुभ और गौरवमय और सम्मान जनक हैं।

वैदिक और उत्तरवैदिक काल से ही ऐसे प्रमाण मिलते हैं। जिसमें नारी को प्रकृति स्वरूपा परमेश्वर की शक्तियों के रूप में स्थान मिला है। विद्या विभूति और शक्ति की क्रमश: सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती या दुर्गा के रूप में सर्वत्र पूजा होती है। वैदिक काल में नारियाँ यत्र दृष्ट ऋषि के रूप में दिखाई देती है। उपनिषद् काल में गार्गी तथा मैत्रेयी जैसी नारियाँ प्रतिष्ठित है। जिनके शास्त्रीय ज्ञान के आगे विज्ञान ऋषि भी ठहर नहीं पाते।

वैदिक काल में आचार्य शिष्य को मातृ देवों भव कहकर पहले माता की पूजा का उपदेश देते हैं। बाद में पिता तथा आचार्य की। भारत वर्ष एक सम्पन्न परम्परा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है। जहाँ महिलाओं का समाज में एक प्रमुख स्थान रहा है। निष्कर्षत: हम यही कह सकते हैं कि समाज में नारियाँ समस्याओं का सामना करते हुए भी समाज और देश के उत्थान में कोई कसर नहीं छोड़ती है महिलाएँ परिवार बनाती है, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है, समाज ही देश बनाता है। इसका सीधा-साधा अर्थ यही है कि महिलाओं का योगदान हर जगह है। महिलाओं की क्षमता को नजर अंदाज करके एक अच्छे समाज की कल्पना करना भी व्यर्थ है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल एम. जी भारत के स्वतंत्रता सेनानी खण्ड IV ज्ञान पब्लिकेशन हाउस 2008
2. थापर सुरूचि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाएँ अनदेखें चेहरे और अनसुनी बुराइयाँ (1930-32)
3. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका दक्षिण एशिया पुस्तकें – 1994
4. डॉ. राजकुमार भारतीय नारी पब्लिकेशन - अर्जुन पब्लिकेशन हाउस (नई दिल्ली)
5. डॉ. सिंह राजवाला - मानवाधिकार एवं महिलाएँ पब्लिकेशन - आविष्कार पब्लिकेशन (जयपुर)
6. इन्टरनेट संचार माध्यम।
7. स्वयं के विचार।